टिप्पणी

21

न्यू मीडिया की विशिष्टता

हम एक ऐसे युग में रहते हैं जहाँ तकनीकी बदलाव की गति बड़ी तीव्र है। हर दिन हमारे पास चारों तरफ से प्राप्त सूचनाओं की बाढ़ रहती है। इंटरनेट इस बात को सुनिश्चित करता है कि कहीं हम किसी सूचना के फ्रंट पर पिछड़ न जायें। कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के आने से समाचार संकलन एवं लेखन में जो परिवर्तन आये वहीं से न्यू मीडिया की अवधारणा ने जन्म लिया। न्यू मीडिया, प्रिंट मीडिया की तरह संचार के लिए सिर्फ मुद्रित शब्द पर निर्भर नहीं करता अपितु यह शब्दों को अनेकों द श्यात्मक तत्वों से जोड़ता है जैसे एनिमेशन एवं कार्टून आदि। इसी प्रकार न्यू मीडिया के जरिये पढ़ाई पुरानी पाठ्यपुस्तकों को अलविदा करने जैसा है। इसके जरिये पढ़ाई काफी मजेदार होती है। हम कम्प्यूटर पर 'गेम' खेलते हैं एवं इसके माध्यम से पहेलियाँ सुलझाते हैं एवं कार्टून बनाते हैं, इसकी मदद से हम इतिहास एवं गणित के पाठ भी पढ़ते हैं। शब्दों एवं द श्यों के इसी विस्मयकारी संगम को न्यू मीडिया कहा जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप निम्न कार्यों में निपुण होंगेः–

- न्यू मीडिया एवं संचार के अन्य माध्यमों में अंतर करना;
- न्यू मीडिया के चरित्र का विस्त त परिचय चित्रित करना;
- न्यू मीडिया की अंतरक्रियात्मकता पर चर्चा;
- टेलीविजन, रेडियो एवं मुद्रित माध्यम के मुकाबले न्यू मीडिया की कमजोर एवं मजबूत पक्षों की तुलना;
- न्यू मीडिया की सीमाओं का विश्लेषण।

21.1 न्यू मीडिया : एक परिचय

श्रीमती माधवन आजकल बहुत परेशान दिखती हैं। वह किसी भी सामाजिक उत्सव में बमुश्किल ही दिखाई पड़ती हैं। और जब लोग उन्हें सड़क पर देखते हैं, तो वह लोगों से बात करने से बचती हैं। पहले वो काफी सक्रिय थीं परंतु अब उनके पड़ोसी नहीं जानते कि उनके साथ क्या हुआ। उनके पड़ोसी की लड़की अंजली कक्षा बारह में पढ़ती है। वह हमेशा श्रीमती माधवन के घर जाती है उनके बेटे आदित्य को गणित के सवाल हल करने में मदद करने के लिये।

अंजली ने अपनी प्री–बोर्ड की परीक्षा दे ली है और शाम को वह आदित्य से मिलती है। वहाँ उसे श्रीमति माधवन हमेशा चिंताओं में घिरी मिलती हैं। एक दिन अंजली ने पूछ ही लिया आपको क्या हुआ है, आप इतनी परेशान क्यों दिख रही हैं?

श्रीमति माधवन ने अपनी चिंता का कारण बताते हुए, कहा, ''दरअसल आजकल आदित्य पढ़ाई पर बिलकुल भी ध्यान नहीं देता। उसके विद्यालय में जाड़े की छुट्टियाँ चल रही हैं और वो अपना सारा दिन कम्प्यूटर के सामने बिताता है। अव्वल ये कि वो झूठ भी बोलने लगा है—वह कहता है कि उसके शिक्षक ने उसे इंटरनेट सर्फ करके ग हकार्य करने को कहा है। मुझे तो पक्का यकीन है कि वह या तो कम्प्यूटर पर गेम खेलता है या कुछ और करता है। क्या करता है ये मुझे पता नहीं।''

चित्र 21.1: चिंतित श्रीमती माधवन एवं आदित्य अपने कम्प्यूटर पर काम करते हुए। आदित्य इस बात पर ध्यान नहीं दे रहा है कि उसकी माँ चिंतित है। वह कम्प्यूटर के सामने बैठ कर मस्त है।

टिप्पणी

अंजलि ने मुस्कराते हुए श्रीमती माधवन का हाथ पकड़ा—''चाची आप चिंता न करें मैं आदित्य से बात करूँगी और मुझे विश्वास है कि उसे पता होगा कि वह क्या कर रहा है।''

चित्र 21.2 : अंजलि श्रीमती माधवन को समझाते हुए।

इतना कहकर अंजलि पढ़ाई वाले कमरे में चली जाती है और आदित्य के साथ कुछ समय बिताती है। बाद में, रात का खाना खाते वक्त वह श्रीमती माधन को सबकुछ बताती है। तब तक श्री माधवन भी काम से लौट आते हैं।

वह बताती है, ''चाची अब जमाना बदल चुका है। हमारे जीवन में तकनीकी ने बहुत बड़ी जगह बना ली है। आजकल पढ़ाई–लिखाई का तरीका भी बदल रहा है। वो दिन लद गए जब बच्चे सिर्फ किताबों से पढाई करते थे।''

मुझे याद है जब हम इतिहास की पुस्तक पढ़ते थे, तो वह विषय जरा भी रुचिकर नहीं लगता था पर मेरा भाई विषय की पुस्तक कभी–कभार ही पढ़ता है। यहाँ तक की उसके शिक्षक भी कहते हैं कि टेलीविजन पर 'हिस्ट्री चैनल' एवं 'डिस्कवरी चैनल' देखो। अब उसे यह विषय इतना अच्छा लगता है कि वो आगे भी इसी विषय में उच्च शिक्षा लेना चाहता है।'' उसने आगे बताया।

''लेकिन अंजलि, इसका यह मतलब है कि बच्चे अब पढ़ेंगे ही नहीं'' श्रीमती माधवन ने पूछा।

''ऐसा नहीं है चाची। तकनीकी केवल हमें सीखने में मदद करती है। कम्प्यूटर पुस्तकों

का स्थान नहीं ले सकते। लेकिन आज सारी दुनिया में लोग महसूस कर रहे हैं कि मात्र शब्द सबकुछ नहीं बता सकते। इसीलिये जब शब्द द श्य, ध्वनि और कार्टून के साथ संयोजित होते हैं, तो सीखने की प्रक्रिया बेहतर हो जाती है। पुस्तकें हमें केवल शब्द तथा चित्र देती हैं, टेलीविजन गतिशील छवियाँ प्रस्तुत करता है और रेडियो ध्वनि। लेकिन इंटरनेट जो देता है वह इन सब का संयोजन है। हम इसे न्यू मीडिया कहते हैं और अब हम नयी चीजें सीखने के लिये इसका व्यापक उपयोग कर रहे हैं।'' अंजलि ने बताया।

अब श्रीमती माधवन की चिंता कम हुई। उन्होंने अंजलि से कहा कि वह अब आदित्य के साथ कुछ ज्यादा समय बिताएँगी ताकि वह यह समझ सकें कि आदित्य क्या सीख रहा है।

21.2 न्यू मीडिया एवं कम्प्यूटर

क्या आप जानते हैं इंटरनेट क्या है? इंटरनेट दुनिया भर में स्थित विभिन्न नेटवर्क वाले अलग–अलग प्रकार के सैकड़ों, हजारों कम्प्यूटरों का एक अंतरसंयोजन है। इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटर का कोई भी उपयोगकर्ता दुनिया किसी अन्य हिस्से के इंटरनेट से जुड़े कम्प्यूटर से संपर्क स्थापित कर सकता है। इंटरनेट न्यू मीडिया का अविभाज्य अंग है।

प्रिंट मीडिया में आप पढ़ चुके हैं कि उसके उत्पाद या तो अखबार होते है अथवा पत्रिका इसी प्रकार इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के उत्पाद या तो समाचार चैनल होते हैं अथवा मनोरंजन चैनल या खेल के चैनल उदाहरणार्थ 'दूरदर्शन' का समाचार चैनल, 'स्टार प्लस' जैसा मनोरंजन चैनल एवं 'डिस्कवरी' और 'एनिमल–प्लैनेट' जैसे यथार्थ–परक चैनल।

न्यू मीडिया का उत्पाद वेबसाइट कहलाता है। हरेक वेबसाइट का अपना पता होता है, इसे देखने के लिए कम्प्यूटर की आवश्यकता होती है। हर कम्प्यूटर स्क्रीन पर एक (आइकॉन) चित्र होता है—इंटरनेट एक्सप्रलोरर। आपको बस उसे क्लिक करना है एक नया स्क्रीन खुल जायेगा। इस नये स्क्रीन पर आप वेबसाइट का पता लिख देंगे तो वह वेबसाइट खुल जायेगा एवं उस पर पोस्ट किये गये सामग्री को आप देख सकेंगे।

टिप्पणी

चित्र : 21.3: वेबसाइट

भारत जैसे देश में जहाँ आज भी गाँवों की संख्या अधिक है कितने लोगों की पहुँच कम्प्यूटर तक है? और अगर लोग कम्प्यूटर का उपयोग नहीं जानते तो न्यू मीडिया की उपयोगिता क्या होगी?

इस सवाल के जवाब के लिए, याद करें कि टेलीविजन ने भारत में अपनी जड़ें किस प्रकार जमाईं थी। जब टेलीविजन पहली बार भारत आया तो कुछ ही लोग टेलीविजन सेट खरीदने लायक थे। जब भी क्रिकेट मैच होता था, तो लोग दुकानों के बाहर खड़े होकर मैच का मजा लेते थे। गाँवों में अक्सर सभी लोग साथ बैठ कर टेलीविजन के कार्यक्रम देखते थे।

इसी प्रकार, पूरे देश में आज साइबर कैफे हैं। इन कैफे में अनेकों कम्प्यूटर रखे होते हैं जहाँ लोग पैसे देकर कम्प्यूटर पर काम करते हैं।

हमें इस बात को समझ लेना चाहिए की लोगों को कम्प्यूटर की शिक्षा लेनी ही पड़ेगी। अतः आप जब कम्प्यूटर शिक्षित हो जायें तो अपने दोस्तों को इसके फायदे के बारे में जरूर बतायें। साथ ही आप अपने माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों को भी बतायें कि वो कम्प्यूटर के जरिये वो क्या–क्या कर सकते हैं। हमने इस खंड के शुरुआत में

पढ़ा था कि श्रीमति माधवन चिंतित थीं, वह भी इसलिए कि वह नहीं जानती थीं कि आदित्य कम्प्यूटर के साथ क्या कर रहा है। और इसलिए चिंतित थी कि उन्होंने इंटरनेट के बारे में दूसरे अभिभावकों से काफी कुछ सुना था। कुछ लोगों ने तो यह भी कहा कि बच्चों को कम्प्यूटर छूने भी नहीं देना चाहिए क्योंकि इंटरनेट पर जो सूचनाएँ एवं चित्र होते हैं वह केवल वयस्कों के लिए होते हैं।

चूँकि श्रीमती माधवन का कम्प्यूटर के विषय में ज्ञान सीमित है अतः वह डरती हैं। यह तो अंजलि थी जिसने उनको बताया कि आदित्य अपने ग हकार्य के लिए इंटरनेट से सूचनाएँ एकत्रित कर रहा है तब जाकर वह थोड़ी शांत हुई।

ऐसा नहीं है कि श्रीमति माधवन बिना वजह चिंतित हो रही थीं। दरअसल बच्चे हमेशा अपना समय कम्प्यूटर गेम एवं दोस्तों से चैटिंग करने में खराब करते हैं। तब यह अभिभावकों एवं शिक्षकों की जिम्मेदारी है कि वे इस बात का खयाल रखें कि किसी कार्य की अति न हो। इसके अलावा अनेकों अभिभावक एवं शिक्षक यह शिकायत करते हैं कि आजकल बच्चे किताब पढ़ना भूल गये हैं। उनको विडियो, कार्टून आदि देखने में ज्यादा मजा आता है और ये सारी चीजें बड़ी आसानी से उनके कम्प्यूटर पर उपलब्ध होती हैं। हमें जिस बात पर गंभीरतापूर्वक विचार करना होगा वह ये है कि इंटरनेट किताबों एवं शिक्षकों की जगह नहीं ले सकता। परन्तु सूचना के लिहाज से ये बड़ा मददगार साबित हो सकता है। दरअसल किसी भी विषय में शोध कार्यों के लिए इंटरनेट अत्यन्त उपयोगी होता है।

पाठ्यगत् प्रश्न 21.1

1. विद्यार्थी आजकल इंटरनेट का उपयोग क्यों करते हैं?
2. क्या कम्प्यूटर के आने से क्या बच्चों के पढ़ने की आदत खत्म होती जा रही है?
3. न्यू मीडिया के उत्पाद को क्या कहा जाता है?
4. श्रीमति माधवन क्यों चिंतित थीं? क्या अंजलि से बातचीत करने के बाद वह शांत हुईं?

क्रियाकलाप 21.1

1. इंटरनेट के विषय में जो आप जानते है अपने मित्र को विस्तारपूर्वक बताएँ।

टिप्पणी

21.3 न्यू मीडिया : संचार का एक प्रारूप

आपने अपने पिछले पाठों में पढ़ा है कि संचार क्या है एवं लोग संचार का प्रयोग कैसे करते हैं। जल्दी से पुनरावलोकन के लिए इस विषय को ऐसे समझें कि संचार से तात्पर्य है सूचना का आदान–प्रदान।

हम जब भी बातें करते हैं तो सूचना, युक्ति एवं संवेदनाओं का आदान–प्रदान करते हैं। कभी–कभी हम बिना बोले, आँखों से ही बहुत कुछ कह जाते हैं। संचार के संदर्भ में महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रतिपुष्टि के बिना संचार अधूरा होता है। अर्थात जब हम बात करते हैं, कुछ पढ़ते हैं अथवा लिखते है तो इनकी दूसरों द्वारा प्रतिपुष्टि जरूरी है।

सभी मीडिया प्रारूपों में—चाहे प्रिंट हो अथवा इलेक्ट्रॉनिक, प्रतिपुष्टि का होना अनिवार्य है। आप सबने समाचारपत्र के उस पन्ने को जरूर देखा होगा जिस पर संपादक के नाम पत्र छपे होते हैं। यह प्रिंट मीडिया में प्रतिपुष्टि का एक तरीका है। टेलीविजन चैनलों का भी अपना–अपना तरीका होता है। हमेशा हम देखते है कि कार्यक्रम के बाद प्रस्तुतकर्ता दर्शकों को उनके वेबसाइट पर कार्यक्रम के अनुभव को भेजने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। आप कोई भी 'रियल्टी शो' देखें दर्शकों द्वारा प्रतिपुष्टि प्रतियोगियों के भाग्य को निर्धारित करता है।

श्रोताओं को माध्यम के हर पहलू में सम्मिलित करने की क्षमता के लिए न्यू मीडिया जाना जाता है। इसे इंटरैक्टीविटी कते हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि दूसरे मीडिया प्रारूपों की तुलना में न्यू मीडिया में प्रतिपुष्टि का तरीका अत्यधिक सबल है।

प्रतिपुष्टि के अलावा दो अन्य तत्व न्यू मीडिया को विशिष्टता प्रदान करते हैं, पहला है, विशिष्ट लेखन का तरीका। न्यू मीडिया में कथाशैली में लेखन किया जाता है। हर स्टोरी कथाशैली में होती है जिससे हम उन्हें बड़े चाव से पढ़ते हैं। इसका फायदा यह है कि अगर गंभीर विषयों को कहानी की शैली में लिखा जाये तो लोग उसे पढ़कर काफी कुछ सीख सकेंगे।

दूसरा तत्व है न्यू मीडिया में मल्टीमीडिया का उपयोग। जैसा की पहले बताया जा चुका है कि जब कहानियों के साथ कार्टून, चलचित्र, ध्वनि एवं संगीत का संयोजन हो तो उसे मल्टीमीडिया कहा जाता है।

अब सवाल यह है कि हम इतना सब कुछ क्यों करते हैं? न्यू मीडिया के फायदे क्या हैं? एक तो, इंटरनेट अति तीव्र है। हमें किसी घटना के जानकारी के लिए सारे दिन अखबार का इंतजार नहीं करना होता। चार बजे शाम को अगर हम क्रिकेट का स्कोर देखना चाहें तो हमें सिर्फ इंटरनेट के वेबसाइट खँगालने की जरूरत है। दूसरे, हमारे पास समूचे अखबार को पढ़ने का समय नहीं होता परन्तु दिन भर के महत्वपूर्ण खबर

जानना जरूरी भी है इसलिए इंटरनेट के वेबसाइट इतने लोकप्रिय होते जा रहे हैं।

पाठ्यगत प्रश्न 21.2

रिक्त स्थानों की पूर्ति सही शब्दों से करें।

1. जब हम संचार कर रहे होते हैं तो हम ——— तथा ——— की भागीदारी करते हैं।
2. संचार के सभी प्रारूपों के लिए जरूरी है ———।
3. न्यू मीडिया में लेखन के लिए ——— शैली का इस्तेमाल होता है।
4. द श्य–श्रव्य, वॉयसओवर, एनिमेशन एवं ग्राफिक्स को लिखित शब्दों के साथ मिलाकर ———बनता है।
5. इंटरनेट एक ——— माध्यम है।

21.4 न्यू मीडिया एवं जन माध्यमों के अन्य प्रारूप

हम हर सुबह अखबार देखते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि हम एक खास समाचार–पत्र ही क्यों लेते हैं। आदित्य ने एक दिन यही सवाल श्रीमति माधवन से किया पर वो इसका जवाब नहीं दे पाईं। बाद में उनके पति श्री माधवन ने अपने बेटे को बताया की दरअसल हम एक खास समाचारपत्र इसलिए पढ़ते हैं क्योंकि सालों से पढ़ते–पढ़ते वो हमें अच्छा लगने लगता है। वह हमारे आदत में शामिल हो जाता है जिसे बदलना मुश्किल होता है। मैंने कुछ दिनों के लिए अपना समाचारपत्र बदला था जब मुझे अपने दफ्तर में एक परीक्षा देनी थी, पर वह समाचारपत्र पढ़ कर मुझे संतुष्टि नहीं होती थी। अगर मैं कोई और समाचारपत्र पढ़ना शुरू कर दूँ तो उसमें भी यही समस्या सामने आयेगी और मुझे अपने पुराने समाचारपत्र को भी पढ़ना पड़ेगा।

हमें से बहुत से लोग अपनी आदतों पर सवाल नहीं करते हैं। पर क्या आपने कभी सोचा है कि लोग समाचारपत्र क्यों पढ़ते है जबकि लगभग सभी खबरें वह टेलीविजन पर देख लेते हैं? अगर हम ऐसा सोचते हैं, तो पत्रकार भी ऐसा सोचते होंगे। यही कारण है समाचारपत्रों में आए बदलाव का, आजकल अखबार पूरी तरह रंगीन हो गए हैं। यहाँ तक की खबर भी बदल गए हैं। समाचारपत्र अपने पाठकों को ढेर सारे रोचक खबर देने की कोशिश करने लगे हैं। अनेकों समाचारपत्रों ने अच्छे फोटोग्राफरों को नौकरी पर

टिप्पणी

इसलिए रखा है कि समाचारपत्रों की गुणवत्ता द श्य के द ष्टिकोण से अच्छी की जा सके। इन सभी बदलाव के पीछे टेलीविजन से बढ़ती प्रतिस्पर्धा है।

ऐसे में न्यू मीडिया का क्या होगा? लोग वेबसाइट पर तभी जाते हैं जब उन्हें किसी खास चीज की तलाश होती है। उदाहरणस्वरूप, अगर आपको जनसंचार के किसी पाठ्यक्रम में दाखिला लेना हो तो आप उन वेबसाइटों को देखेंगे जो आपको सम्बन्धित सूचना दे सकते हैं। इसके अलावा हमलोग न्यू मीडिया का उपयोग अपने कार्यस्थल पर करते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि न्यू मीडिया हमारी जिंदगी में वहाँ आता है जहाँ हमारे पास टेलीविजन नहीं होता। घर पर हम इंटरनेट पर कहानियाँ बामुकिश्ल पढ़ते हैं क्योंकि यह हम सारी चीजें टेलीविजन पर देख सकते हैं।

चूँकि ज्यादातर लोग वेबसाइट का प्रयोग काम के समय करते है अतः वह अपेक्षा करते है कि भाषा सरल एवं बोधगम्य हो। यही कारण है कि न्यू मीडिया लेखन के लिए कथाशैली का प्रयोग करता है जो कि पाठकों द्वारा आसानी से समझा जा सकता है। मल्टीमीडिया का प्रयोग संचार चक्र को मजबूती प्रदान करने के लिए किया जाता है। न्यू मीडिया की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि यह अपने पाठकों को आकर्षित करती है या नहीं। इसके लिए कहानी को रुचिकर बनाना पड़ता है इसे रुचिकर कारक कहा जाता है। न्यू मीडिया के भाषा एवं मल्टिमीडिया पैकेजिंग करते वक्त इस 'रुचिकर कारक' का ध्यान रखना होता है।

न्यू मीडिया का अंतरक्रियात्मक चरित्र

रुचिकर कारक के अलावा न्यू मीडिया की प्रमुख विशेषता है उसकी अंतरक्रियात्मकता। जिसका अर्थ है; पाठकों द्वारा पाठ्य सामग्री में उनका हस्तक्षेप, पाठक कभी भी ब्लॉग के जरिये अपने विचार व्यक्त कर सकते हैं। ब्लॉग के बारे में आपको पता है कि यह ऑनलाइन डायरी के समान होते हैं। जो अपना अनुभव लिखना चाहते हैं वो आसानी से ब्लॉग शुरू कर सकते हैं। क्या आजकल कोई भी समाचार वेबसाइट के लिए लिखना शुरू कर सकता है? सच कहा जाये तो ये कोई नई बात नहीं है। पहले भी हम संपादक के नाम संदेश भेजते थे। जिसमें कोई भी, किसी भी विषय पर लिखकर समाचारपत्र को छपने के लिए भेजता था। परन्तु चूँकि चिट्ठियों का अंबार लग जाता था अतः कुछेक पत्रों को ही समाचारपत्र में जगह मिलती थी।

न्यू मीडिया के पास जगह की कमी नहीं है। जब भी लोग ब्लॉग लिखते हैं, तो पूरी कहानी बिना संपादन के छप जाती है। अगर आप किसी समाचार चैनल के वेबसाइट को देखेंगे तो आपको अनेकों ब्लॉग मिल जायेंगे जिसे नामचीन पत्रकारों ने लिखा है। सबसे बढ़िया बात यह है कि ये ब्लॉग अंतःमन से लिखे होते हैं। कभी–कभी इनमें हास्य का भी पुट होता है।

ब्लॉग के विषय में दूसरी बात यह है कि आप जैसा सोचते हैं, महसूस करते हैं, वैसा ही लिख सकते हैं। एक आपदा प्रबंधन से सम्बन्धित लेखक ने सूनामी के ऊपर ब्लॉग की एक श ंखला ही चला रखी थी उसके वेबसाइट पर सूनामी के ऊपर सौ से भी अधिक लेख थे। स्पष्ट है कि ये लेख समाचारपत्रों एवं अन्य माध्यमों से ज्यादा जानकारी देने वाले होते हैं। यही कारण है कि ब्लाग के लिए इंटरनेट पर ज्यादा जगह की जरूरत होती है। यहाँ लेखक समय से बँधा नहीं होता यह उसकी आत्मसंतुष्टि है जो उसे ब्लॉग लिखने के लिए उत्प्रेरित करती है।

क्रियाकलाप 22.1

आप अपनी डायरी लिखनी शुरू कर दें। इसमें पूरे सप्ताह के अपने अनुभव को एक बार जरूर लिखें। आपने अगर कोई किताब पढ़ी हो अथवा किसी दिलचस्प व्यक्ति से अपनी मुलाकात को जरूर लिखें।

प्रिंट मीडिया एवं टेलीविजन के मुकाबले न्यू मीडिया की श्रेष्ठता

न्यू मीडिया क्या करता है? इसने हमारे संप्रेषण का तरीका बदल दिया है। यह संचार का ऐसा माध्यम बन चुका है जिसे हम नजरअंदाज नहीं कर सकते । क्या आप जानते हैं कि आजकल सभी व्यावसायिक उपक्रमों की अपनी वेबसाइट है। कोई व्यक्ति अगर उस उपक्रम के बारे में जानना चाहता हो उसे बस इंटरनेट पर उसकी वेबसाइट को देखने की जरूरत है। उदाहरण के लिए, अगर कोई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन लर्निंग द्वारा चलाये जा रहे पाठ्यक्रमों के बारे में जानना चाहता हो तो उसे बस एन. आइ.ओ.एस. की वेबसाइट पर लॉग ऑन करने की जरूरत है उसे सभी जानकारी मिल जायेगी।

समाचारपत्रों का अपना वेबसाइट होता है। ये वेबसाइट अमूमन उनके प्रिंट संस्करणों के प्रतिकृति मात्र होते हैं। अगर हम ऑनलाइन पत्रकारिता के इतिहास को देखें तो 'द हिन्दु' एवं 'द इंडियन एक्सप्रेस', समाचारपत्रों ने भारत में पहली बार अखबारों के वेब संस्करण निकाला था। परन्तु उस समय वेबसाइट उनके प्रिंट संस्करणों से अलग नहीं थे। सुबह के अखबार वाले समाचार ही उन वेबसाइटों पर होते थे। उस समय वेबसाइटों पर एनिमेशन एवं दूसरे द श्य संचार वाले प्रारूप भी नहीं होते थे।

इन वेब संस्करणों का दूसरा उद्देश्य भी है, जैसे, भारत के दक्षिणी राज्य के पाठक 'द हिंदू' अखबार से परिचित हैं पर वैसे भारतीय पाठक जो कनाडा में बैठे हैं, 'द हिंदू' के विषय में कैसे जान सकते हैं। यहीं पर न्यू मीडिया कि उपयोगिता सिद्ध होती है। क्योंकि कोई व्यक्ति विश्व के किसी भी कोने से बैठकर कहीं से निकलने वाले अखबारों का वेब संस्करण पढ़ सकता है।

टिप्पणी

कुछ मीडिया संगठनों ने अपनी वेबसाइट तैयार करने के लिए बहुत सा धन खर्च किया है। अब यदि पाठक इन वेबसाइट्स पर पंजीकृत होता है तो उसके जरूरत की सूचना उसे अपने मोबाइल फोन पर मिल जाती है। उदाहरण के लिए यदि आपकी रुचि क्रिकेट में है और नई दिल्ली में भारत और आस्ट्रेलिया के बीच मैच चल रहा है। उस समय आप अपनी गरमी की छुट्टियाँ बिताने अपने दादा–दादी के पास लखनऊ गये हैं। परन्तु आपने एक समाचार चैनल की वेबसाइट पर अपने को पंजीकृत किया है और आपके पास मोबाइल फोन है। ऐसे में हर आधे घंटे पर अपना ताजा स्कोर अपनी मोबाइल स्क्रीन पर फ्लैश होता मिलेगा। क्या यह दिलचस्प नहीं है?

अधिकांश टेलीविजन चैनलों के पास उनकी अपनी वेबसाइट है। जाहिर है ये वेबसाइटें सूचना के लिए ही हैं। कोई व्यक्ति किसी टेलीविजन समाचार चैनल पर लॉग ऑन कर सकता है तथा और प्रसारित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों को देख सकता है। वेबसाइट प्रतिपुष्टि (फीडबैक) का एक महत्वपूर्ण साधन भी है। दर्शक वेबसाइट पर लॉग ऑन करके किसी कार्यक्रम के विषय में अपनी प्रतिपुष्टि तथा टिप्पणी प्रेषित कर सकते हैं। आप मुद्रित, टेलीविजन या न्यू मीडिया में से किसे बेहतर माध्यम समझते हैं? यह प्रश्न उत्तर के लिये थोड़ा मुश्किल है। सभी माध्यमों के अपने गुण एवं दोष होते हैं। हम प्रायः सोचते हैं कि आदित्य की तरह आजकल के अधिकांश बच्चे पढ़ने में रुचि नहीं रखते। इसीलिए अब सुबह समाचारपत्र पढ़ने की आदत भी लोगों में नहीं पायी जाती। हममें से अधिकतर लोग इंटरनेट से तत्काल सूचना प्राप्त कर लेते हैं। इसीलिए हमारी पढ़ने की आदत समाप्त होती जा रही है।

श्री माधवन भी इससे सहमत हैं। यह सच है कि ढेर सारी सूचनाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं, परन्तु विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक मुद्दों पर गहन सूचनाएँ जो वह चाहते हैं, उनके समाचारपत्र में ही उपलब्ध है। इसलिए वह समाचारपत्र पढ़ना कभी बंद नहीं करेंगे।

वास्तव में श्री माधवन जब कार्यालय में होते हैं तब इंटरनेट पर सर्फ भी करते हैं। जब उनके पास बहुत समय नहीं होता तो संचार का यही प्रकार उन्हें अनुकूल लगता है। लेकिन रात में वह टेलीविजन पर कम से कम एक समाचार बुलेटिन सुनना अधिक पसंद करते हैं। पुनः सवेरे–सवेरे वह किसी तरह जल्दी से समाचारपत्र पर एक नजर डाल ही लेते हैं। कुछ लेखों पर वह निशान लगा देते हैं और शाम को घर लौटने पर वे इसे सावधानी से पढ़ते हैं।

अब यह स्पष्ट है संचार के ये सभी माध्यम जैसे मुद्रित, टेलीविजन और न्यू मीडिया एक दूसरे के साथ अस्तित्व में बने रहेंगे। क्या आप भी ऐसा ही समझते हैं?

चित्र 21.4 श्री माधवन एक समाचारपत्र पढ़ रहे हैं। उनके निकट एक कम्प्यूटर और टेलीविजन भी रखा हुआ है।

21.7 न्यू मीडिया की सीमाएँ

लेकिन क्या आप समझते हैं कि न्यू मीडिया के साथ सब कुछ ठीक है? यथार्थ में नहीं। ठीक उसी तरह जैसे मीडिया के अन्य रूपों की अपनी सीमाएँ हैं, न्यू मीडिया की कुछ हानियाँ हैं। यहाँ सर्वाधिक महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि यदि कोई एक ब्लॉग लिख सकता है और यह बिना संपादन के इंटरनेट पर आ जाता है, तो कोई भी व्यक्ति खुराफात करने के लिए इंटरनेट पर ऐसा कुछ भी डाल सकता है जिसका प्रभाव विपरीत हो। ऐसा पहले हो चुका है और इसीलिए मीडिया संगठन इसे रोकने के लिए आवश्यक सावधानियाँ बरतने का प्रयास कर रहे हैं। इसके साथ, जैसा कि श्री माधवन समझते हैं, व इंटरनेट पर कुछ पढ़ना पसंद नहीं करते क्योंकि इसमें अखबार जैसी अनुभूति तथा रूप नहीं होता। ऐसा बहुत से लोग महसूस करते हैं। लेकिन क्या आदित्य भी ऐसा सोचता है? शायद नहीं। क्योंकि उसे कम्प्यूटर स्क्रीन पर पढ़ने की आदत है। इसके बावजूद अगर वह अपनी पाठ्यपुस्तक ध्यान से नहीं पढ़ता तो यह संभव नहीं कि इंटरनेट उसे परीक्षा में अच्छे अंक दिला सके। इस लिहाज से श्रीमती माधवन की चिंता भी उचित है।

पाठगत प्रश्न 21.3

बताइये कि निम्नलिखित वक्तव्य सही है या गलत।

i) ब्लॉग लेखक पत्रकारिता के नियमों से बँधे नहीं होते।

टिप्पणी

ii) भारतीय गाँवों में लोग तकनीकी को स्वीकार नहीं करते।

iii) कंपनियाँ स्वेच्छा से अपनी वेबसाइट लोगों को लिखने के लिए खोल देंगी।

iv) न्यू मीडिया में विश्वसनीयता का कोई मुद्दा नहीं है।

v) इंटरनेट युवाओं के बीच अत्यधिक लोकप्रिय हो गया है क्योंकि यह तीव्र है तथा यह मल्टीमीडिया का उपयोग करता है।

21.8 आपने क्या सीखा?

→ न्यू मीडिया – एक परिचय

न्यू मीडिया तथा कम्प्यूटर

- इंटरनेट एक्सप्लोरर
- वेबसाइट
- साइबर कैफे

संचार के एक प्रकार के तौर पर न्यू मीडिया

- प्रतिपुष्टि प्रणाली
- अंतरक्रियात्मकता
- लेखन की कथात्मक शैली
- मल्टीमीडिया का उपयोग

न्यू मीडिया तथा जन माध्यमों के अन्य प्रकार

- समाचारपत्र तथा वेबसाइट्स
- टेलीविजन तथा न्यू मीडिया
- न्यू मीडिया – अभिरुचिकारक

न्यू मीडिया की अंतरक्रियात्मक प्रकृति

- ब्लॉग
- ऑनलाइन डायरी

मुद्रित माध्यम तथा टेलीविजन की तुलना में न्यू मीडिया के लाभ

- समाचारपत्रों के वेब संस्करण
- टेलीविजन चैनलों की वेबसाइट्स
- कन्वर्जेंस

न्यू मीडिया की सीमाएँ

21.9 पाठान्त प्रश्न

1. संचार के एक रूप के तौर पर न्यू मीडिया का महत्व बताइये।
2. अपने दैनिक जीवन में कम्प्यूटर के महत्व का मूल्यांकन कीजिये। अपना उत्तर उचित उदाहरण के साथ दीजिए।
3. मुद्रित माध्यम तथा टेलीविजन की तुलना में न्यू मीडिया के लाभ पर चर्चा कीजिये। न्यू मीडिया की सीमाएँ क्या हैं?

21.10 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

21.1 1 छात्र इंटरनेट का उपयोग शैक्षिक उद्देश्यों के लिए करते हैं। वे अपना ग हकार्य करने के लिए सूचनाएँ एकत्र करते हैं।

2. पढ़ने की आदत कम होती जा रही है क्योंकि लोगों के पास पर्याप्त फुरसत का समय नहीं है। फिर भी लोगों को सूचना की जरूरत है। इंटरनेट सूचनाओं का खजाना उपलब्ध कराता है। अतः यदि लोग सर्फिंग भी कर रहे हैं, तो उसके बावजूद वे पढ़ते होते हैं।
3. वेबसाइट
4. श्रीमती माधवन इसलिए चिंतित हैं कि उनका बेटा आदित्य बहुत सारा समय कम्प्यूटर पर व्यतीत करता है और कुछ सीख नहीं रहा है। अंजलि से बात करने के बाद वह कुछ बेहतर महसूस कर रही हैं। क्योंकि अंजली ने उन्हें इंटरनेट के बारे में सब कुछ बताया।

21.2 1. i) सूचना, विचार, अनुभूति
ii) प्रतिपुष्टि
iii) कहानी
iv) मल्टीमीडिया
v) अंतरक्रियात्मक

21.3 1. i) सही
ii) गलत
iii) गलत
iv) गलत
v) सही